इकाई 17 तार्किक दृष्टिकोण

इकाई की रूपरेखा

17.0 उद्देश्य

17.1 प्रस्तावना

17.2 तर्कसंगति अथवा तार्किक दृष्टिकोण और तर्कसंगतिकरण का अभिप्राय

17.3 वेबर की रचनाओं में तर्कसंगति की अवधारणा

- 17.3.1 प्रोटेस्टेंटवाद
- 17.3.2 पूंजीवाद
- 17.3.3 नौकरशाही
- 17.3.4 तर्कसंगत के प्रकारः मूल्य-विमुक्त समाजशास्त्र

17.4 समाजशास्त्रीय शोध में तर्कसंगतिः मूल्य-विमुक्त समाजशास्त्र

17.5 सारांश

17.6 शब्दावली

17.7 कुछ उपयोगी पुस्तकें

17.8 बोध प्रश्नों के उत्तर

17.0 उद्देश्य

इस इकाई में तार्किक दृष्टिकोण अथवा तर्कसंगति के विषय में चर्चा की गई है। इस अवधारणा का वेबर की रचनाओं में बार बार उल्लेख है। इस इकाई को पढ़ने के बाद आपके द्वारा संभव होगा

- तर्कसंगति और तर्कसंगतिकरण, दोनों अवधारणाओं का अर्थ स्पष्ट करना
- प्रोटेस्टेंटवाद, पूंजीवाद और नौकरशाही व्यवस्था के संदर्भ में तर्कसंगति पर वेबर के अध्ययन की व्याख्या करना
- समाजशास्त्रीय शोध और मूल्य-विमुक्त समाजशास्त्र के क्षेत्र में तर्कसंगति के विषय पर वेबर के विचारों में चर्चा करना।

17.1 प्रस्तावना

इस खंड की पिछली इकाइयों में आपने आदर्श प्ररूप, धार्मिक नैतिकता और आर्थिक व्यवहार के बीच संबंधों तथा शक्ति और **सत्ता** के बारे में समाजशास्त्र के क्षेत्र में मैक्स वेबर के महत्वपूर्ण योगदान के बारे में जाना। इस इकाई में उसकी रचनाओं के मूल विषय अर्थात् तर्कसंगति की अवधारणा और तर्कसंगतिकरण के बारे में चर्चा की गई है। इस **परिकल्पना** का वेबर की सभी रचनाओं में उल्लेख हैं इसलिए हो सकता है कि आपको इस इकाई के कुछ भाग पिछली इकाइयों की पुनरावृत्ति प्रतीत हों। इस इकाई में आपको अपनी पूर्व पठित अवधारणाओं को दोहराने का और तर्कसंगति के संदर्भ में उनका अध्ययन करने का अवसर मिलेगा।

इस इकाई को तीन भागों में बांटा गया है। पहले भाग (17.2) में तर्कसंगति और

तर्कसंगतिकरण के अर्थ के बारे में संक्षेप में बताया गया है। दूसरे भाग(17.3) में वेबर द्वारा अपनी रचनाओं में प्रयोग की गई तर्कसंगति की अवधारणा के महत्व पर प्रकाश डाला गया है। इस भाग में प्रोटेस्टेंटवाद, पूंजीवाद, नौकरशाही व्यवस्था और तर्कसंगति के प्रकारों की चर्चा की गई है। तीसरे और अंतिम भाग(17.4) में वेबर द्वारा मूल्य-विमुक्त समाजशास्त्र के विशिष्ट संदर्भ में समाजशास्त्रीय शोध के लिए तर्कसंगति के अनुप्रयोग पर ध्यान केंद्रित किया गया है।

17.2 तर्कसंगति अथवा तार्किक दृष्टिकोण और तर्कसंगतिकरण का अभिप्राय

"तर्कसंगति" का मतलब ऐसे विचारों और व्यवहारों से है जो **तर्क** की दृष्टि से संगत और अनुरूप है और जिनकी अनुभव के आधार पर जांच की जा सकती है। तर्कसंगति की प्रक्रिया का अभिप्राय उस प्रक्रिया से है जिसके द्वारा तर्कसंगति का प्रयोग जीवन के विभिन्न पक्षों और गतिविधियों में किया जाता है। तर्कसंगति मानव मात्र का विशिष्ट अभिलक्षण है। इस विश्वास ने दो सौ से भी अधिक वर्षों से तर्कसंगति को पाश्चात्य दर्शन का मूल विषय बना दिया है (मिचेल 1968: 142)।

वेबर के मत में तर्कसंगति आधुनिक युग की विशेषता है। मैक्स वेबर का यह भी विश्वास है कि आधुनिक समाज को समझने के लिए हमें इसके तर्कसंगत अभिलक्षणों और तर्कसंगत शक्तियों को समझना होगा। उसके अनुसार आधुनिक पाश्चात्य जगत की विशेषता तर्कसंगति ही है। इसके कारण मानव गतिविधियों में विधिवत गणना, परिमाण-निर्धारण, पूर्वानुमान और नियमितता का महत्व बढ़ गया है। अब लोग अलौकिक शक्तियों पर विश्वास करने के बजाय तर्क, विवेक और परिकलन में अधिक विश्वास करते हैं। वेबर के मत में तर्कसंगति प्रक्रिया का अभिप्राय यह है कि सिद्धांत रूप से ऐसी किसी प्रकार की रहस्यमय अनिश्चित शक्तियां नहीं हैं जिनसे हमें अपने कार्य में किसी प्रकार की सहायता मिलती है बल्कि सिद्धांततः सभी चीजों को परिकलन द्वारा नियंत्रित किया जा सकता है। प्राचीन काल के लोगों की तरह हमें भूतप्रेत आदि को बस में करने के लिए रहस्यमयी जादुई शक्तियों की ज़रूरत नहीं है (वेबर 1946: 139; हर्न 1985: 76)। आइए, हम एक उदाहरण द्वारा समझें। अगर किसी को अच्छी फ़सल लेना हो तो वह या तो अपना समय, शक्ति और पैसा पूरा करे और प्रार्थना आदि में नष्ट करे अथवा व अपनी शक्ति और धन का उपयोग सिंचाई के लिए नहरों की खुदाई में अथवा ट्यूबवैल लगाने में करके अच्छी फ़सल प्राप्त करे। इनमें पहली स्थिति में वह रहस्यमयी अनिश्चित शक्तियों पर निर्भर है और दूसरी स्थिति में उसने तर्कसंगत परिकलन का सहारा लिया है।

वेबर के मत में तर्कसंगतिकरण पाश्चात्य संस्कृति की वैज्ञानिक विशेषज्ञता और प्रौद्योगिक विभेदीकरण का परिणाम है। उसने इस प्रक्रिया की व्याख्या करते हुए कहा कि तर्कसंगतिकरण का अभिप्राय पूर्णता के लिए प्रयास करना है ताकि जीवन के व्यवहार में पूर्ण परिष्कार हो सके और बाह्य जगत पर नियंत्रण स्थापित हो सके (देखिए फ्राएंड 1972: 18)। अपने विश्वासों को रहस्यमुक्त करना और विचारों को लौकिक बनाना, ये दोनों तर्क संगति की प्रक्रिया के महत्वपूर्ण पहलू हैं। इनकी मदद से मनुष्य का संसार पर प्रभुत्व हो सकता है। इस प्रक्रिया से क़ानूनों और संगठनों को उचित रूप प्रदान किया जा सकता है।

जैसा कि इससे पहले उल्लेख किया जा चुका है वेबर की रचनाओं में तर्कसंगति की

अवधारणा का बार-बार उल्लेख हुआ है और तर्कसंगतिकरण (यानी और अधिक तर्कसंगत बनाना) की भी बार-बार चर्चा हुई है। वेबर समाज को तर्कसंगत स्वरूप में प्रस्तुत करने के लिए प्रयत्नशील रहा है। उसने अपनी रचनाओं में तर्कसंगति और तर्कसंगतिकरण दोनों अवधाणाओं का प्रयोग कई बार कई अर्थों में किया है। वेबर ने अपनी सभी कृतियों में सामाजिक रूपों की तर्कसंगति और उनके परिवर्तन से संबधित तर्क को भी खोजने का प्रयास किया है।

वेबर ने तर्कसंगति को सामाजिक व्यवस्था के तर्कसंगतिकरण की प्रक्रिया के रूप में देखा। यह सब मानव समाज में तर्कसंगत संगठनों और संस्थानों के उद्भव से संभव हुआ है। उसने मानव मूल्यों, विश्वासों, विचारों और क्रियाओं में तर्कसंगतिकरण की प्रक्रिया का प्रतिबिंब पाया। उसने सामाजिक विज्ञानों में भी तर्कसंगति के तत्वों का अस्तित्व खोजा।

आधुनिक समाजों में तर्कसंगतिकरण की विशेषता की अभिव्यक्ति स्वैकरैशनल कार्यों के संदर्भ में हुई है, ये क्रिया उससे प्राप्त होने वाले लक्ष्य से संबंधित है। इस प्रकार तर्कसंगति की प्रक्रिया के क्षेत्र का विस्तार आर्थिक, राजनीतिक, धार्मिक आदि व्यवस्थाओं और संगठनों तक है। वेबर ने तर्कसंगति की अवधारणा का व्यापक रूप से प्रयोग सामाजिक क्रियाओं, सामाजिक संगठनों और सामाजिक प्रक्रियाओं के अध्ययन के लिए किया है। उसने इसका प्रयोग समाज की वैज्ञानिक जांच की प्रणाली के रूप में भी किया। इस प्रकार वेबर की रचनाओं में तर्कसंगति का समावेश दो पूर्णतया भिन्न लेकिन परस्पर संबंद्ध विधियों से हुआ है। इनके बारे में हमने इस इकाई के अगले भाग (17.3) में विवेचना की है। अगले भाग को पढ़ने से पहले, बोध प्रश्न 1 को पूरा करें।

बोध प्रश्न 1

i) निम्नलिखित वाक्यों में सही शब्दों से खाली जगह भरिए।

क) वेबर के मत में तर्कसंगतिकरण वैज्ञानिक ..... और .... विभेदीकरण का परिणाम है।

ख) तर्कसंगतिकरण का अभिप्राय ..... पर नियंत्रण है।

ii) निम्नलिखित कथनों में सही अथवा ग़लत पर चिन्ह लगाइए।

क) तर्कसंगति का मतलब भूत-प्रेतों और जादू-टोने पर विश्वास करना है।
सही/ग़लत

ख) मानवीय मूल्यों और विश्वासों को कभी भी तर्कसंगत नहीं बनाया जा सकता।
सही/ग़लत

ग) तर्कसंगतिकरण का विस्तार समाज के सभी पक्षों तक हो सकता है।
सही/ग़लत

17.3 वेबर की रचनाओं में तर्कसंगति की अवधारणा

वेबर ने अपने अध्ययन में तर्कसंगति की अभिवयक्ति पूर्णतया अलग लेकिन परस्पर संबद्ध तरीक़ों से की है। इनकी चर्चा नीचे की जा रही है।

(i) समाजः तर्कसंगतिकरण की प्रक्रिया

पहले अर्थ के अनुसार समाज का अध्ययन तर्कसंगतिकरण की प्रक्रिया है। समाज में होने वाले परिवर्तनों के पीछे यह नियम है कि पुराना कम तर्कसंगत स्वरूप बाद के

अधिक तर्कसंगत स्वरूप में परिवर्तित हो जाता है। इस प्रक्रिया को उसने तर्कसंगतिकरण कहा है यानी कि तर्क इतिहास अथवा ऐतिहासिक प्रक्रिया का एक महत्वपूर्ण घटक बन जाता है।

वेबर ने इतिहास के विकास, विशेष रूप से आधुनिक इतिहास के विकास को तर्कसंगति और तर्कसंगतिकरण रूप में देखा है। प्रोटेस्टेंटवाद, पूंजीवाद और नौकरशाही इस तर्कसंगतिकरण की प्रक्रिया स्वरूप है। इन्हें ऐतिहासिक विकास के एक भाग के रूप में ही सार्थकता मिलती है यानी ठीक उसी प्रकार जैसे पहले की अपेक्षा बाद का विकास अधिक तर्कसंगत होता है।

(ii) **तर्कसंगतिः विज्ञान पद्धति का साधन**

तर्कसंगति पर विचार करने का एक दसरा तरीक़ा भी है। इसमें तर्क संगति को विचार पद्धति का सिद्धांत अथवा शोध पद्धति माना जाता है। यहां वेबर का उद्देश्य विभिन्न सामाजिक रूपों और प्रक्रियाओं के पीछे निहित तर्क को खुले रूप में प्रस्तुत करना है। चाहे वे पहली नज़र में तर्कहीन या तर्क-विरोधी क्यों न प्रतीत हों। इस दृष्टि से तर्कसंगति एक जांच की पद्धति है जो किसी सामाजिक स्वरूप या सामाजिक विकास के पीछे निहित तर्क को खोजने का प्रयास करती है।

आगे के उपभागों में हमने समाज की तर्कसंगतिकरण की प्रक्रियाओं के तर्कसंगत अभिलक्षणों के बारे में विचार करें।

17.3.1 प्रोटेस्टेंटवाद

वेबर द्वारा *द प्रोटेस्टेंट एथिक एंड द स्पिरिट ऑफ़ कैपीटलिज़्म* का अध्ययन प्रायः उसके सबसे महत्वपूर्ण योगदानों में से एक माना जाता है। वेबर का विश्वास विचारों की, विशेषतः धार्मिक विचारों की प्रभावशीलता में है। ये विचार समाज और विभिन्न सामाजिक स्वरूपों और भौतिक यथार्थ का सृजन व रूपांतरण कर सकते हैं। इस प्रकार दोनों ही की दृष्टियों में पूंजीवाद और समकालीन समाज के सामाजिक संगठनों में पूंजी की प्रमुखता है। पूंजीवाद समाज पर आधिपत्य जमाने का प्रमुख साधन है। वेबर पूंजीवाद को उत्पादनकारी शक्तियों की वृद्धि मानता है लेकिन यह एक विशेष प्रकार की धार्मिक चेतना के उद्भव और विकास का परिणाम है जिसे प्रोटेस्टेंट नैतिकता कहा जाता है। इस प्रोटेस्टेंट नैतिकता को कल्विनवादी नैतिकता कहते हैं। इसका मध्यकालीन प्रोटेस्टेंट मत से संबंध था। सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि इसमें ईसाई धर्म के परम्परागत सिद्धांतों की तर्कसंगत व्याख्या की गई हैं, जिसमें सांसारिक भौतिक लाभों को पारलौकिक महत्वाकांक्षाओं के साथ जोड़ दिया गया है। वेबर ने उन परिशुद्ध तरीक़ो की ओर ध्यान आकृभट किया जिनमें निजी धार्मिक मुक्ति के साथ-साथ भौतिक समृद्धि और प्रभुता को पाने का भी प्रयास किया गया है। वेबर का कथन है कि इसी उदात तार्किकता के कारण पूंजीवाद का जन्म हुआ। वेबर के अनुसार इस रूपांतरण के संदर्भ में सबसे महत्वपूर्ण तर्कसंगत व्याख्या लौकिक आत्मसंयम के विकसित होने की थी जिसके अंतर्गत विषयासक्ति से दूर रहने तथा बचत एवं संचय की भावना पैदा हुई। इसके द्वारा ईश्वर में विश्वास रखने वाला व्यक्ति प्रभु की कृपा का अधिकारी बन सकता है। वेबर के मत में प्रोटेस्टेंट नैतिकता में सन्निहित तर्कवाद ने आधुनिक पूंजीवाद की भौतिक परिस्थितियों के और अधिक विकास में मदद की (देखिए हर्न 1985: 76)।

17.3.2 पूंजीवाद

मैक्स वेबर ने आधुनिक समाज में तर्कसंगत पूंजीवाद के विकास के लिए कुछ महत्वपूर्ण

परिस्थितियों की पहचान की। ये हैं - उत्पादन के सभी भौतिक साधनों का निजी स्वामित्व, विपणन स्वातंत्र्य, यंत्रीकरण, लिखित क़ानून और प्रशासन **उन्मुक्त श्रम** तथा आर्थिक जीवन का वाणिज्यीकरण। वेबर का दृढ़ विश्वास है कि विश्व के अनेक भागों में ऐसी स्थितियां बन रही हैं लेकिन वे सबसे पहले आधुनिक तर्कसंगत पूंजीवाद में दिखाई दीं जहां प्रोटेस्टेंटवाद की धार्मिक नैतिकता का दबदबा था। उसके अनुसार प्रोटेस्टेंटवाद तर्कसंगत पूंजीवाद के भौतिक आधार के विकास के परम्परागत विरोध को कम करने में सहायक हुआ (देखिए हर्न 1985: 77)।

वेबर, पूंजीवादी समाज की तर्कसंगति से तथा सामाजिक स्वरूपों और प्रक्रियाओं की व्यवस्थाबद्ध तर्कसंगति से बहुत प्रभावित था। सामाजिक संगठन और संघ की प्रणाली में राजनीतिक प्रक्रिया के स्वरूप, सत्ता की प्रकृति और लोगों की मनोवृति में तर्कसंगति की झलक मिलती है। वेबर ने काफ़ी विस्तारपूर्वक लिखा है कि विभिन्न प्रकार से पूंजीवादी समाज न केवल पूर्ववर्ती समाज या समाजों से अधिक तर्कसंगत है बल्कि वह तर्क को एक आवश्यक प्रक्रिया और संगठन के सिद्धांत के रूप में प्रवर्तित और स्थापित करता है। वेबर ने अपनी प्रमुख कृति *इकोनॉमी एण्ड सोसाइटी* में यह बताया है कि किस प्रकार पूंजीवाद समाज में जिसमें उसके अनुरूप तर्क पर आधारित अपने स्पष्ट सिद्धांत और तर्कसंगत संगठन हैं। वेबर ने यह भी जांच की है कि तर्कसंगतिकरण की यह निरन्तर चलने वाली प्रक्रिया किस तरह पूंजीवाद के विकास के तर्क का एक भाग है।

17.3.3 नौकरशाही

वेबर के अनुसार आधुनिक नौकरशाही व्यवस्था औपचारिक तर्कसंगति की सामाजिक अभिव्यक्ति है। औपचारिक तर्कसंगति का अभिप्राय विश्वास और भावुकता के स्थान पर नियमों और प्रक्रियाओं को महत्व देना है। नौकरशाही का विकास शासकों को शासितों से, आम व्यक्तियों को पद की प्रतिष्ठा से और भावनाओं व विश्वासों को कार्यप्रणालियों और विनियमों से अलग करने पर आधारित है। अतः वेबर कई तरह से नौकरशाही को तर्कसंगतिकरण के रूप में देखता है। इनमें से कुछ का उल्लेख नीचे किया गया है। उदाहरणतः

i) प्रयोजनों और कार्यप्रणालियों को सुव्यवस्थित करने से नौकरशाही व्यवस्था अधिक व्यवहार्य हो जाती है।

ii) पूर्व स्थापित और परिभाषित प्रतिमानों के आधार पर अधिकारों और कर्त्तव्यों को सीमित करने से कार्यक्षमता में वृद्धि होती है और

iii) सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि नौकरशाही व्यवस्था में कार्यरत अधिकारियों की भर्ती, पदोन्नति और सेवानिवृति की कार्यप्रणालियों की तार्किकता से उनका जीवन अधिक सुरक्षित और व्यवस्थित बन जाता है।

वेबर की दृष्टि से नौकरशाही व्यवस्था तर्कसंगत प्रभुता का ढांचा है। जैसा कि आपने इस खंड में अन्यंत्र पढ़ा है कि नौकरशाही तर्कविधिक सत्ता की विशिष्ट अभिव्यक्ति है। इसलिए शक्ति तभी वैध कही जाती है जब इसका उपयोग औपचारिक, व्यक्ति निरपेक्ष नियमों और विनयमों द्वारा किया जाये जो नौकरशाही व्यवस्था के आधार हैं। इसके साथ ही नौकरशाही व्यवस्था अपने सदस्यों के तर्कसंगत कार्यों को बढ़ावा देती हैं (देखिए हर्न 1985: 79)। वेबर नौकरशाही के विकास को पूंजीवाद के तर्कसंगत विकास के अनिवार्य अंग के रूप में देखता है क्योंकि यह अत्याधिक तर्कसंगत और तर्कपरक है। वेबर ने एक महत्वपूर्ण विरोधाभास या अंतर्विरोध की ओर भी ध्यान दिलाया है।

नौकरशाही मनोवृति के विकास से सृजनशीलता और साहसिकता की भावना समाप्त हो जाती है, ये ही ऐसे कारण हैं जिनकी वजह से पूंजीवादी व्यवस्था संभव हुई है।

इकाई के इस बिंदु पर बोध प्रश्न 2 तथा सोचिए और करिए 1 को पूरा करें।

बोध प्रश्न 2

i) मैक्स वेबर ने अपनी कृति में तर्कसंगति को कैसे प्रस्तुत किया है? उत्तर छः पंक्तियों में लिखिए।

.....

.....

.....

.....

.....

.....

ii) उस प्रक्रिया का वर्णन कीजिए जिसमें प्रोटेस्टेंट नैतिकता ने ईसाई धर्म के विश्वासों को तर्कसंगत बनाया और जो यूरोप में पूंजीवाद के उद्भव के लिए अनुकूल थी। लगभग पांच पंक्तियों में उत्तर दीजिए।

.....

.....

.....

.....

.....

सोचिए और करिए 1

किसी सरकारी या अर्धसरकारी कार्यालय में जाइए और उस कार्यालय की विशेषताओं की जांच नौकरशाही के तर्कसंगतिकरण के संदर्भ में कीजिए। अपने प्रेक्षण के आधार पर दो पृष्ठ की टिप्पणी लिखिए। यदि संभव हो तो अपने अध्ययन केंद्र के अन्य विद्यार्थियों की टिप्पणियों से अपनी टिप्पणी की तुलना कीजिए।

17.3.4 तर्कसंगति के प्रकारः स्वैकरैशनलिटैट और वैर्टरेशनलिटैट

ऊपर दिए गए उपभागों को पढ़ने के बाद आपने यह निष्कर्ष निकाला होगा कि तर्कसंगति केवल आधुनिक पूंजीवादी समाज की विशेषता है। क्या इसका यह मतलब है कि गैर-पूंजीवादी स्वरूप के सामाजिक संगठन अतर्कसंगत हैं। समाजशास्त्र के विद्यार्थी होने के नाते आपको यह मालूम ही है कि समाज का इसके सदस्यों के लिए एक विशेष लक्ष्य और संगतिकरण होता है। हर समाज के विकास के पीछे अपना एक तर्क होता है, इसकी अपनी क्रम व्यवस्था और सामाजिक संबंध की व्यवस्था होती हैं। इस अर्थ में, सभी समाजों की, चाहे वे पूंजीवादी हों या गैर-पूंजीवादी हों, उनकी अपनी तर्कसंगति होती है। कई प्रकार के सामाजिक स्वरूपों और प्रतिमानों का अध्ययन करने के बाद वेबर ने तर्कसंगति के दो विशिष्ट प्रकार प्रस्तुत किए। इनमें पहली स्वैकरैशनलिटैट या लक्ष्य पर आधारित तर्कसंगति है और दूसरी वैर्टरैशनलिटैट या मूल्य पर आधारित तर्कसंगति।

इनमें पहली आधुनिक, पूंजीवादी समाज की विशेषता है और इसका आधार लक्ष्योन्मुख सामाजिक क्रिया है, जिसके बारे में आपने पहले ही पढ़ा है। स्वैकरैशनलिटैट का संबंध उस तार्किकता से है जो साधन और साध्य/लक्ष्य पर केंद्रित है। अपने अभीष्ट लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए तर्क और तार्किक चिंतन आवश्यक है।

इसके विपरीत "वैर्टरैशनलिटैट" पारम्परिक सामाजिक स्वरूप की विशेषता है। इसमें नैतिक मूल्यों का महत्व है और यह व्यक्ति के मनोवेगों, भावनाओं और विश्वासों को प्रभावित करती है। इसमें व्यक्तिगत क्रियाओं के समाज द्वारा अनुमोदन को महत्वपूर्ण माना जाता है। वेबर के अनुसार परम्परागत समाजों में सामाजिक संगठन के तर्कसंगत तत्व तो थे लेकिन वे इन्हें नैतिक मूल्यों या प्रतिमानों के रूप में स्वीकार करते थे।

चित्र : 17.1 समाज और तर्कसंगति

इस संबंध में चित्र 17.1 समाज और तर्कसंगति देखिये और एक उदाहरण लीजिए। आप परम्परागत (पूर्व पूंजीवाद) समाज में कृषि के बारे में विचार कीजिए। खेत में कब हल चलाया जाए, कब बीज बोया जाए या कब फ़सल काटी जाए, ये सब बातें मौसम, तापमान या मिट्टी में नमी की मात्रा आदि तर्कसंगत आवश्यकताओं को ध्यान में रखकर निश्चित की जाती थी। लेकिन इसके साथ ही इन अवसरों और क्रियाओं का नैतिक महत्व भी था। इन अवसरों के लिए उत्सवों और अनुष्ठानों का विधान था। इसके विपरीत आधुनिक कारखाने (पूंजीवाद व्यवस्था) में साधन और लक्ष्य को ध्यान में रखते हुए वहां के सभी क्रियाकलाप यांत्रिक रूप से उत्पाद में अधिक से अधिक वृद्धि करने के लिए संचालित होते हैं। ऐसा लगता है कि समय के अंतराल के साथ देश-विदेश में उपभोगितावाद के चलते पूंजीवाद व्यवस्था में भी उत्सवों और अनुष्ठानों का प्रवेश हो गया है।

समाज और तर्कसंगति के बिंदु को अधिक आत्मसात् करने के लिये सोचिये और करिए 2 को पूरा करें।

सोचिए और करिए 2

उपभाग 17.3.3 को एक बार फिर ध्यान से पढ़िए। अब आप ऐतिहासिक सामाजिक प्रक्रियाओं की तर्कसंगति का अनुसरण करते हुए अपने समाज की तर्कसंगति के बारे में अपने प्रेक्षण के आधार पर विवरण दीजिए। यदि संभव हो तो अपनी टिप्पणी की तुलना अपने अध्ययन केंद्र के अन्य विद्यार्थियों की टिप्पणियों से कीजिए।

17.4 समाजशास्त्रीय शोध में तर्कसंगतिः मूल्य-विमुक्त समाजशास्त्र

यह पहले भी उल्लेख किया जा चुका है कि वेबर के अध्ययन में तर्कसंगति पर दो भिन्न-भिन्न लेकिन परस्पर संबद्ध दृष्टियों से विचार हुआ है, यानी एक तो ऐतिहासिक दृष्टि से तत्कालीन समाज में तर्कसंगतिकरण का आगमन हुआ और दूसरे तर्क का एक प्रमुख पद्धति तथा समाज की जांच की एक पद्धति के रूप में आगमन हुआ।

वेबर समाजशास्त्र के विकास की मुख्य धारा का एक हिस्सा है और समाजशास्त्र के विकास में सबसे महत्वपूर्ण योगदान करने वालों में उसका प्रमुख स्थान है। अन्य समाजशास्त्रियों के समान वेबर ने अपना समय विभिन्न पद्धतियों पर विचार करने और उनका विस्तार करने तथा इन पद्धतियों का वास्तविक उपयोग करने में लगाया और वह स्वयं भी अपने समय के महत्वपूर्ण, साहसी ऐतिहासिक कार्यों में उलझा रहा।

मैक्स वेबर की मूल चिंता का एक विषय था विज्ञान और मानवीय कार्यों के बीच संबंध। उसने समाजशास्त्र को सामाजिक कार्य के व्यापक विज्ञान के रूप में समझा। वेबर की दृष्टि में मानव-जगत की प्रमुख विशेषता तर्कसंगतिकरण है। आधुनिक समाजों की तर्कसंगतिकरण की विशेषता को क्रियाकलापों के रूप में अभिव्यक्त किया गया है जिसमें कार्य अपने लक्ष्य या परिणाम से जुड़े होते हैं। उसने विज्ञान को तार्किकता की प्रक्रिया के महत्वपूर्ण पक्ष के रूप में भी देखा, जो आज के यूरोपीय समाजों की विशेषता है (आरों 1867: 1897)। वेबर ने तर्कसंगतिकरण के अंश के रूप में मूल्य-विमुक्त सामाजिक विज्ञान की बात कही जो हमारे समय में भी काफी वाद-विवाद का विषय रहा, चाहे इसका संदर्भ कुछ भिन्न ही क्यों न रहा हो। वेबर विश्व को अधिक तर्कसंगत बनाने के प्रयास से सामाजिक-जांच की तर्कसंगति को अलग करने के मत का दृढ़ समर्थक था। उसके अनुसार समाजशास्त्रियों का व्यक्तिगत मूल्यांकन उनके द्वारा किए गए समाज के अध्ययन के विश्लेषण से अलग रहना चाहिए। वेबर के मूल्य-विमुक्त समाजशास्त्र की मुख्य बातों को संक्षेप में निम्नलिखित प्रकार से बताया जा सकता है।

i) अपने समाज के अध्ययन में समाजशास्त्री की दिलचस्पी मुख्य रूप से मूल्यों के विश्लेषण करने और उसको समझने में होती है, क्योंकि ये समाज के महत्वपूर्ण तत्व हैं। समाजशास्त्री चाहे जिस किसी भी विषय का अध्ययन करे उसे अपने मूल्यों को, समाज को समझने के मार्ग में रुकावट नहीं बनने देना चाहिए। यह मूल्य-विमुक्त समाजशास्त्र का मूल आधार है।

ii) एक मनुष्य के नाते समाजशास्त्री को मूलतः मूल्यांकन, मूल्यनिर्धारण और अवमूल्यन करना होता है। जहां तक उसका व्यक्तिगत संबंध है उसके लिए मूल्यों के बिना जीना संभव नहीं। जिन मूल्यों के साथ समाजशास्त्र का विकास होता है वे निस्संदेह रूप से वे मूल्य हैं, जिनसे ज्ञान और विज्ञान का विकास होता है, तथा वे निष्पक्ष जांच के योग्य हैं। इस जांच में समाजशास्त्री का मूल्य निर्धारण करने या अवमूल्यन करने का अपना अनुभव ही आधार सामग्री होता है जो समाजशास्त्री के अध्ययन की सार्थकता और प्रासंगिकता को अंतदृष्टि प्रदान करता है।

iii) मूल्य-विमुक्त सामाजिक विज्ञान के विकास के लिए एक ऐसी संस्था के निर्माण की आवश्यकता है जिसके पास विश्वसनीय और सुनिश्चित जानकारी हो। बाद में यह जानकारी किसी आगे के अध्ययन का आधार भी बन सकती है। यह बात ज्ञान की एक शाखा के रूप में केवल समाजशास्त्र के क्षेत्र के अंतर्गत नहीं है। कोई ज्ञान

तभी किसी क्रिया का निर्देशक बन सकता है, जबकि ज्ञान की वह शाखा स्वयं में विश्वसनीय हो।

इस संदर्भ में यहां यह उल्लेख कर देना आवश्यक प्रतीत होता है कि वेबर स्वयं एक प्रख्यात समाजशास्त्री होने के साथ-साथ दो विश्व युद्धों के बीच की अवधि में संकटग्रस्त जर्मनी का एक जाना माना राजनीतिज्ञ भी था। आज वेबर को उसके समाजशास्त्रीय और राजनैतिक क्रियाकलापों के कारण याद किया जाता है। उसने ऐसे समय में तर्क के पक्ष का समर्थन किया, जबकि उसे चारों ओर से चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा था। अतः जब वेबर के मूल्य-विमुक्त समाजशास्त्र के प्रतिपादन के संबंध में विचार किया जाए, तब हमें इस उपर्युक्त तथ्य को भी ध्यान में रखना होगा।

आइए, अब बोध प्रश्न 3 को पूरा करें

बोध प्रश्न 3

i) स्वैकरैशनल समाज का वर्णन लगभग तीन पंक्तियों में कीजिए।

.....

.....

.....

ii) वैर्टरैशनल समाज का वर्णन तीन पंक्तियों में कीजिए।

.....

.....

.....

iii) मूल्य-विमुक्त समाजशास्त्र का चार पंक्तियों में वर्णन कीजिए।

.....

.....

.....

.....

17.5 सारांश

इस इकाई में आपने तर्कसंगति और इसकी सहगामी प्रक्रिया अर्थात तर्कसंगतिकरण के बारे में पढ़ा। ये दोनों विषय मैक्स वेबर की रचना के आधारभूत विषय हैं। इन शब्दों के भाव को समझने के बाद आपने देखा कि कैसे वेबर ने प्रोटेस्टेंटवाद, पूंजीवाद और नौकरशाही व्यवस्था के अपने विश्लेषण में इनका अध्ययन किया। आपने यह भी देखा कि कैसे वेबर ने तर्कसंगति को स्वैकरैशनलिटैट और वैर्टरैशनलिटैट दो प्रकारों में वर्गीकृत किया। अंत में आपने पढ़ा कि किस तरह वेबर ने तर्कसंगति का प्रयोग समाजशास्त्रीय जांच में किया और मूल्य-विमुक्त समाजशास्त्र का समर्थन किया।

17.6 शब्दावली

उन्मुक्त श्रम यह ऐसे मज़दूरों का श्रम है, जो ठेके पर काम करते हैं तथा अपना रोज़गार, नियोक्ता और रोज़गार की शर्तें चुनने के लिए स्वतंत्र होते हैं।

तर्क	किसी कार्य या विचार की व्याख्या या औचित्य आदि
परिकल्पना	ऐसी परस्पर संबंद्ध अवधारणाओं का कथन जिनकी वैधता की जांच की जा सके
सत्ता	संस्थागत विधि द्वारा वैध शक्ति

17.7 कुछ उपयोगी पुस्तकें

आरों, रेमों, 1967. *मेन करंट्स ऑफ सोशियोलॉजिकल थॉट.* वाल्यूम 2, पेंगुइन बुक्सः लंदन

थॉम्पसन, के. एंड जे. टनस्टाल, (सम्पादक) 1971. *सोशियोलॉकिल पर्सपैक्टिव्स.* पेंगुइन बुक्सः मिडलसेक्स

व्हिम्स्टर, सैम (सम्पादक) 2004. *द एशौंशियल वेबरः ए रीडर.* रटलजः न्यूयॉर्क

17.8 बोध प्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्न 1

i) क) विशेषज्ञता, प्रौद्योगिक
   ख) बाह्य जगत

ii) क) ग़लत
   ख) ग़लत
   ग) सही

बोध प्रश्न 2

i) मैक्स वेबर के अध्ययन में तर्कसंगति दो भिन्न-भिन्न प्रकारों में दिखाई देती है। सर्वप्रथम उसने समाज का अध्ययन तर्कसंगतिकरण की प्रक्रिया के रूप में किया अर्थात् समाज में परिवर्तन का एक नियम है जो कम तर्कसंगत रूप से अधिक तर्कसंगत रूप की ओर होता है, दूसरे उसने तर्कसंगति का प्रयोग विचार पद्धति के साधन के रूप में किया, जिसे विचारपद्धति का सिद्धांत या शोध की विधि कहा जाता है। इस दृष्टि से तर्कसंगति शोध की एक पद्धति है, जिसके द्वारा सामाजिक स्वरूप या विकास के पीछे निहित तर्क की खोज की जाती है।

ii) वेबर का कथन था कि परंपरागत प्रोटेस्टेंट नैतिकता के पीछे तर्कसंगतिकरण के कारण पूंजीवाद का उद्भव हुआ। सबसे महत्वपूर्ण तर्कसंगत व्याख्या अंतर्मुखी संयम के विकसित होने की है, जिसके कारण प्रोटेस्टेंटवाद को मानने वालों के मन में विषयसक्ति से दूर रहने और बचत व संचय करने की भावना पैदा होती है। इसके द्वारा ईश्वर पर विश्वास रखने वाला व्यक्ति प्रभु की कृपा का पात्र बनने के लिए आश्वस्त हो जाता है।

बोध प्रश्न 3

i) स्वैकरैशनल समाज एक पूंजीवादी समाज है। यह समाज साधनों और लक्ष्यों की तार्किकता का प्रतिनिधित्व करता है और अपनी इच्छाओं की पूर्ति के लिए प्रभावशाली साधन के रूप में तर्क का सहारा लेता है।

ii) वैर्टरैशनल समाज पूंजीवाद से पहले का परंपरागत समाज है। इस समाज का संबंध विशेष रूप से नैतिकता से है जो मनोवेगों, मूल्य-निर्णयों को प्रभावित करती है और व्यक्तिगत क्रियाकलापों के सामाजिक अनुमोदन पर बल देती है।

iii) समाजशास्त्रियों की दिलचस्पी मुख्य रूप से अपने समाज के अध्ययन तथा मूल्यों के विश्लेषण और उनको समझने में होती है, क्योंकि ये किसी भी समाज के अत्यंत महत्वपूर्ण तत्व हैं। लेकिन जब समाजशास्त्री किसी विषय का अध्ययन करे तो उसे अपने स्वयं के मूल्यों को अपने अध्ययन में रुकावट नहीं बनने देना चाहिए।

संदर्भ ग्रंथ सूची

(अ)

ऐलन, कीयर्न 2004. *मैक्स वेबरः ए क्रिटिकल इंट्रोडक्शन.* प्लूटो प्रैसः एन आर्बर, मिशिगन

आरों, रेमों, 1967. *मेन करंट्स ऑफ सोशियोलॉजिकल थॉट.* वाल्यूम 2, पेंगुइन बुक्सः लंदन

बेंडिक्स, आर., 1960. *मैक्स वेबरः एन इंटेलैक्चुअल पोर्ट्रेट.* एंकरः न्यूयार्क

कालबर्ग, स्टीफ़न 1994. *मैक्स वेबर कम्पेरिटिव–हिस्टोरिकल सोशियोलजी.* द यूनिवर्सिटी आफ़ शिकागो प्रेस. शिकागो

कसलर, डर्क 1988. *एन इंट्रोडक्शन टु हिज़ लाइफ़ एण्ड वर्क,* फ़िलिप्पा हर्ड द्वारा अनुवादित. शिकागो युनीवर्सिटी प्रैसः शिकागो

कोलिन्स, कोबल्ड, *इंगलिश डिक्शनरी.* कोलिन्स पब्लिशर्सः लंदन

कोज़र, एल.ए. 1977. *मास्टर्स ऑफ़ सोशियोलॉजिकल थॉटः आइडियाज़ इन हिस्टोरिकल एंड सोशल कॉन्टेक्स्ट.* हरकोर्ट प्रेस जोवानोविचः न्यूयार्क

फ़ाएंड, जे. 1972. *द सोशियोलॉजी ऑफ़ मैक्स वेबर.* (ट्रांसलेटेड फ़्रॉम द फ्रेंच बार मैरी इलफ़ोर्ड), पेंगुइन बुक्सः मिडिलसेक्स

गर्थ एच.एच.एंड मिल्स, सी. डब्ल्यू.,(सम्पादक) 1952. *फ़्रॉम मैक्स वेबरः एस्सेज़ इन सोशियोलॉजी,* रूटलेज एंड केगनपॉलः लंदन

हर्न, एफ़., 1985. *रीज़न एंड फ़्रीड्म इन सोशियोलॉजिकल थॉट.* एलेन एंड अनविनः बोस्टन

कैप्लान, ए., 1972. 'पॉज़िटिविज्म' इन डी.एल. सिल्स (संपादित) *इंटरनैशनल एनसाइक्लोपीडिया ऑफ़ सोशल साइंसेज़,* द मैकमिलन कं. एंड द फ्री प्रैसः न्यूयॉर्क, वाल्यूम-2, 389-395

मिचेल, जी. डी.(संपादित), 1968. *ए डिक्शनरी ऑफ़ सोशियोलॉजी.* रूटलेज एंड केगन पॉलः लंदन

स्क्रूटन, आर., 1982. *ए डिक्शनरी ऑफ़ पोलिटिकल थॉट.* पैन बुक्सः लंदन

स्वेन, एलियासन 2002. *मैक्स वेबर्स मैथडॉलजीसः इंटरप्ररेशन एंड क्रिटीक.* पॉलिटीः मल्डन, मडिसन

सिंगर, एम., 1969. *'मॉडर्नाइज़ेशन रिचुअल एंड बिलीफ़ एमग इंडस्ट्रियल लीडर्स इन मद्रास* सिटी' इन ए. के. सिंह (सम्पादित) *मॉडर्नाइज़ेशन इन इंडिया स्टडीज़ इन सोशियो-कल्चरल एस्पैक्टस्.* एशिया पब्लिशिंग हाउसः मुम्बई

टर्नर, स्टीफ़न (सम्पादन) 2000. *द केम्ब्रिज कंपेनियन टु वेबर.* केम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेसः केम्ब्रिज

वेबर, एम, 1948. *द प्रोटेस्टेंट एथिक एंड द स्पिरिट ऑफ़ कैपिटलिज़्म.* (ट्रांसलेटेड बाय टॉलकॅट पार्सन्स विद ए फ़ार्वर्ड बाय आर. एच.टॉनि) एलेन एंड अनविनः लंदन

वेबर एम. 1949 *मैक्स वेबर ऑन द मैथोडोलॉजी ऑफ़ सोशल साइंस* (ट्रांसलेटेड एंड एडिटिड बाय एडवर्ड शिल्स एंड एच. ए. फ़िंच), फ्री प्रैसः गलैन्को

वेबर एम. 1964. *द थ्योरी ऑफ़ सोशल एंड इकोनॉमिकल आर्गेनाइज़ेशन* (ट्रांसलेटेड एंड एडिटिड बाय ए. एम. हैंडरसन एंड टॉलकॅट पार्सन्स), फ्री प्रैसः गलैन्को

वेबर एम. 1971. आइडियल टाइप्स, इन के. थॉम्पसन एंड जे. टन्सटाल(संपादित) *सोशियोलॉजिकल परस्पैक्टिव्स,* पेंगुइन बुक्सः मिडिलसेक्स, पृभठ 63-67

व्हिम्स्टर, सैम (सम्पादक) 2004. *द एशौशियल वेबरः ए रीडर.* रटलजः न्यूयॉर्क

वेब्स्टर. एन., 1985. *न्यू वेब्स्टर डिक्शनरी ऑफ़ इंगलिश लैंगवेज़,* डिलेयर पब्लिशिंग कंः यू.एस.ए.

(ब) हिन्दी में उपलब्ध कुछ पुस्तकें

सिंह, आर. जी. समाजशास्त्र की मूल अवधारणाएं. मध्यप्रदेश हिन्दी ग्रंथ अकादमीः भोपाल

श्रीवास्तव, सुरेन्द्र कुमार, समाजविज्ञान के मूल विचारक. उत्तर प्रदेश हिन्दी ग्रंथ अकादमीः लखनऊ